आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023
Received:10/09/2023; Accepted:19/09/2023; Published:24/09/2023

'कोरगा' आदिवासी – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1] सुमा टी.आर.
सह प्राध्यापिका, विश्वविध्यालय कालेज,
मंगलूरु
[2]रामकृष्ण के.एस
सहायक प्राध्यापक
सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय
सुल्या 574239
ईमेल – ramakrishnay86@gmail.com
Mobile: 9845392610

[1] सुमा टी.आर. [2]रामकृष्ण के.एस,**'कोरगा' आदिवासी – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023, (424-428)

[1] **सुमा टी.आर.**,सह प्राध्यापिका, विश्वविध्यालय कालेज, मंगलूरु, [2]**रामकृष्ण के.एस**, सहायक प्राध्यापक सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय, सुल्या.

शोध सार:

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में आदिवासियों की जनसंख्या 8.6% है| ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी आबादी 11.3% है तो शहरी क्षेत्रों में मात्र 2.8% है| संविधान के अनुसूचित जनजाति सूची के अनुसार 645 आदिवासी समुदाय भारत में रहते हैं| कर्नाटक राज्य में पचास आदिवासी समुदाय हैं|

2011 की जाणागणना के अनुसार कर्नाटक में इनकी कुल आबादी 16,071 थी| कर्नाटक की कुल आबादी में 6.99% लोग आदिवासी हैं| उनमें कोरगा आदिवासी समुदाय भी एक है| कोरगा समुदाय के लोग ज़्यादातर कर्नाटक के दक्षिण कन्नड, उडुपी और केरल के कासरगोड ज़िलों में पाए जाते हैं| यह एक विशेष रूप से कमज़ोर

जनजातीय समूह है(Particularly Vulnerable Trible Groups)| कर्नाटक सरकार ने इस समुदाय को आदिम जनजाति के रूप में घोषित किया है| यह कमज़ोर जनजातीय समूह होने के कारण इनकी आर्थिक दशा दिनों -दिन बिगड़ती जा रही है| टोकरी बुनना इनका पेशा है| ये अजलु प्रथा के शिकार हैं| समाज में इनको समानता नहीं मिली है| इनकी आबादी भी दिन-ब-दिन घटती जा रही है| इनकी भाषा द्रविड भाषा परिवार में आती है|

संकेत शब्द: कोरगा समुदाय, आर्थिक स्थिति, अजलु पद्धति, टोकरी बुनना, इतिहास

इतिहास: कोरगों के इतिहास के बारे में जानने के लिए कोई ठोस ग्रंथ उपलब्ध नहीं है| लभ्य सामग्री के आधार पर कहा गया है चालीस हज़ार वर्षों से दक्षिण भारत में कोरगा आदिवासी जीवन यापन कर रहे हैं| कोरगा लोग दक्षिण कन्नड और उडुपी के मूल निवासी हैं| कोरगा में चार जातियाँ हैं| कोरगा कन्नड शब्द है| कोरु, कोरेवरु आदि शब्दों से कोरगा की उत्पत्ति हुई है| ब्राह्मण स्त्री और शूद्र पुरुष के मिलन से कोरगा का जन्म मानते हैं| ऐतिहासिक आधार पर यह विचार व्यक्त हुआ है कि हुब्बाषिका नाम के व्यक्ति ने 15 वीं शताब्दी में कर्नाटक और केरल के तटीय क्षेत्रों पर 12 वर्षों तक अपना राज चलाया था| हुब्बाषिका को दास समुदाय का नेता या नायक माना जाता है|

आर्थिक जीवन: कोरगा समुदाय अपनी जीविका के लिए टोकरी बुनने का काम करते हैं| ये लोग जंगलों से बाँस लाकर टोकरी बनाते हैं और उसे बेचकर अपना जीवन चलाते हैं| आजकल ये कुली का काम भी करने लगे हैं| दूसरों के बागों में काम करते हैं साथ ही साथ कुछ कोरगा लोग शहरों में मकान निर्माण कर्मचारी के रूप में भी काम करने लगे हैं|

ये 'कोट्टु' नामक घरों में रहते हैं| यह घर कच्चा घर होता है| बाँस और नारियल के पत्तों से इन घरों को बनाया जाता है| आजकल ऐसे घरों में रहनेवाले कोरगों की संख्या कम है, क्योंकि सरकार की ओर से कई आवासीय योजनाओं के तहत पक्का घर दिए जा रहे हैं| अब 80% से अधिक लोग पक्का घरों में रहने लगे हैं|

धार्मिक आचरण: कोरगा लोग भूतों और दैवों में विश्वास रखते हैं| केड्डसा- (धरती माँ की पूजा करने का दिन) त्योहार के समय स्त्री- पुरुष धरती माँ की पूजा करके भोग चढ़ाते हैं फिर नाचते हैं और सब मिलकर गाते भी हैं| ये प्रकृति के आराधक हैं| इनके कई नाम सूर्य, चाँद आदि से मिलते हैं| इनमें कई ग्रहों के नाम भी हैं|

अजलु प्रथा: यह सबसे घिनौनी प्रथा है| इस प्रथा के तहत उच्च वर्ग के लोग नाखून और बाल को भोजन के साथ मिलाकर कोरगा लोगों को खाने के लिए देते थे|| फिलहाल कर्नाटक सरकार ने 2000 इसवीं से इस पर प्रतिबंध लगाया है| नेमोत्सव(एक धार्मिक आचरण) के संदर्भ में इसका आचरण ज़्यादा होता था| कुछ ही साल पहले कर्नाटक के कार्कला और सालिग्राम नामक स्थानों में इस प्रथा के आचरण की खबरें फैली थीं|

सामाजिक स्थिति: कोरगा समुदाय में तीन प्रमुख भेद पाए जाते हैं| सप्पिना, अंडे और कप्पड़ा ये तीन प्रमुख भेद हैं| पहले मातृ प्रधान परिवार था| लेकिन अब पितृ प्रधान हो गया है| अलिय संतान अब ज्यादातर देखने को नहीं मिलता है| अब मक्कल संतान है| कोरगा समाज में भी परिवर्तन आ रहा है| कोरगा लोग मरने के बाद शव को दफनाते थे, अब जलाने की प्रथा भी चल रही है|

इनमें शिक्षा की कमी है| स्वास्थ्य की कमी भी है| कई बच्चे कुपोषण के शिकार बन रहे हैं| इनकी सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं है| कोरगा लोग अपनी आय का 40-50% भाग दारू पीने में ही उड़ा देते हैं| साथ ही साथ बीड़ी भी पीते हैं और पान खाने का भी अभ्यास है|

कोरगा संस्कृति: कोरगा लोग ढोल बजाते-बजाते पले हैं| शायद जंगली जानवरों से खुद की रक्षा के लिए ढोल बजाते थे| आज मनोरंजन एवं विविध सांस्कृतिक संदर्भों में बजाते हैं| कोरगा लोग ढोल बजाने में माहिर हैं| कर्नाटक के दक्षिण कन्नड ज़िले में 'गजमेला' है, यह ढोल बजानेवालों की एक प्रसिद्ध टोली है| भारतीय समाज के लिए यह एक सांस्कृतिक देन है| ढोल के लिए 'कड्डाई' कहते हैं| 'ऊँटे' एक प्रकार की बाँसुरी है| छोटा ढोल 'चंडे' कहलाता है| कोरगों में पारंपरिक वैद्य पद्धति का भी विकास हुआ है|

कोरगा समुदाय के भेद और उनकी भाषा: कोरगा आदिवासियों की भाषा का नाम कोरगार, कोरगारा या कोरंगी है| कोरगा समुदाय में चार भाषाएँ बोली जाती हैं| मुडु कोरगा, कोर्रा कोरगा आदि भेद पाए जाते हैं| इनकी भाषा बोलचाल की भाषा है और इसे कन्नड लिपि में लिखी जाती है| कोरगों की भाषा तुलु से भी पुरानी भाषा है| आजकल यह भाषा बोलनेवालों की संख्या कम होती जा रही है| आज कोरगा समुदाय में 25-30% लोग कोरगा भाषा बोलते हैं|

तप्पु कोरगा एक जाती भी है एक भाषा भी है| कोरगा भाषा एक स्वतंत्र भाषा है| कोरगों ने एक नई भाषा का विकस किया है| कोरगा भाषा का प्रयोग कम होने का कारण उनमें व्याप्त हीनता की भावना है| कोरगों में पढे-लिखे लोग ही अपनी मातृभाषा का प्रयोग बहुत विरले ही करते हैं| वे लोग अपनी भाषा दूसरों को सिखाना भी

नहीं चाहते| Lawrence D'Souza नामक लेखक ने कोरगा भाषा पर एक किताब भी लिखी है| कोरगा भाषा की कोई लिपि नहीं है|

कप्पु कोरगा लोग मंगलूरु के आसपास रहते हैं| उनकी एक अलग भाषा है| सोपपु कोरगा कुंदापुर, तीर्थहल्ली में वास करते हैं| उनकी अलग-अलग भाषाएँ हैं| कप्पड़ा कोरगा लोगों की भी अलग भाषा है| इनकी भाषा बाकी कोरगों से भिन्न है| कप्पड़ा कोरगा भाषा में कन्नड शब्दों का बाहुल्य है| फिर भी समझना थोड़ा मुश्किल है| कोरगा भाषा पर कन्नड और तुलु भाषा का प्रभाव अधिक देख सकते हैं| आज भी लगभग चार हज़ार लोग कोरगा भाषा बोलते हैं|

कोरगा समुदाय की अबकी स्थिति: कोरगा समुदाय अब जंगलों से दूर होकर जीवन जी रहे हैं| आधुनिक समाज के साथ मिलकर जीने का प्रयास कर रहे हैं| शिक्षा की ओर भी उनका ध्यान जा रहा है| 2010 ई में कोरगा समुदाय के जयदीप शेणै नाम के एक व्यक्ति को पी. एचडी प्रदान की गई है| उनमें कई उच्चतर शिक्षा पाने लगे हैं| कई विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय अर्हता परीक्षा में उत्तीर्ण होकर अपनी ताकत दिखाई है| बैंदूर के निवासी लक्ष्मण कोरगा ने कोरगा भाषा पर अध्ययन किया है| उनमें कुछ लोग लेखन का काम भी कर रहे हैं| ऐसे लोग ज़्यादातर शहरों में रहने लगे हैं| दक्षिण कन्नड ज़िले में 1,126 कोरगा परिवार हैं| कोरगा अभिवृद्धि ओक्कूटा (Federation of Koraga Development Authority) कोरगा आदिवासियों के कल्याण के लिए काम कर रहा है|

उपसंहार:

कर्नाटक के दक्षिण कन्नड और उडुपी ज़िलों में और केरल के कासरगोड जिलों में रहनेवाले कोरगा आदिवासी आज भी गरीबी की बदहाल ज़िंदगी जी रहे हैं| उनकी उन्नति के लिए सरकार की ओर से कई प्रयास किए जा रहे हैं| वे सारी सुविधाएँ उन तक सही – सही नहीं पहुँच रही हैं| 'अजलु' जैसी बुरी प्रथा पर सम्पूर्ण रूप से रोक लगाने की जरूरत है| समाज में समानता लाने का काम करना है| उनकी जीविका के लिए सही बंदोबस्त करना आवश्यक है| कोरगों की भाषा को बचाने से उस पर अध्ययन किया जा सकता है| उनमें ढोल बजाने की जो कला है, उसे प्रोत्साहन देना है| कोरगा लोग पारंपरिक वैद्य पद्धति भी जानते हैं, उन पद्धतियों की रक्षा करना भी हमारा कर्तव्य है| उनमें जो हीनता की ग्रन्थि हैं, उसे दूर करने के लिए उन्हें साक्षर बनाना चाहिए| सरकार की ओर से बहुत-कुछ करने को बाकी है| एक आदिम जनजाति को बचाना हम सबकी ज़िम्मेदारी भी है| उसे लुप्त

होने नहीं देना है| भारत विविधता में एकता पर विश्वास रखता है| विविध सांकृतियों को बचाना है| कोरगों की संस्कृति अद्वितीय है, उसकी रक्षा होनी चाहिए| उन्हें समाज में मान – सम्मान मिलना चाहिए| कोरगा संस्कृति कभी विलुप्त न हो| इस दिशा में कदम उठाना चाहिए|

सहायक ग्रंथ:

1) A Socioeconomic and educational conditions of Koragas (with reference of 100 selected families of Koraga in and around Kundapura in Udupi district) – Ramachandra – International Journal of Creative Research Thoughts(IJCRT) ISSN – 2320-2882 – volume 8, Issue- 9 – September 2020
2) Monographs of PVTGs of Kerala Koraga - 1) Kerala Institute for Research Training and Development Studies of Scheduled Castes and Scheduled Tribes (KIRTADS), Kozhikode 2
3) Depopulation of Koraga Tribes in South India – Nalinam.M IOSR -JHSS – volume 8 – issue 4 Ma. April -2013
4) ಅಮೃತ ಸೋಮೇಶ್ವರ : ಕೊರಗರು, ಐ ಬಿ ಹೆಚ್ ಪ್ರಕಾಶನ, ಬೆಂಗಳೂರು 1982
5) ಪಾಂಗಾಳ ಬಾಬು ಕೊರಗ : ಆದಿ ಬುಡ ಮೂಲ ಸಮುದಾಯ – ಕೊರಗರು , ಕರ್ನಾಟಕ ತುಳು ಸಾಹಿತ್ಯ ಅಕಾಡೆಮಿ, ಮಂಗಳೂರು
6) विकिपीडिया और इंटरनेट से संग्रहीत सामग्री

****